Þ'kj.kdqekj fyackys ds miU;klksa esa nfyr thou dk lÄ"kZ % ,d v/;;uß

jkaph fo'ofo|ky;] jkaph ds fgUnh foHkkx ekufodh ladk; esa ih,p-Mh- mikf/k gsrq çLrqr 'kks/k çk:i

funsZ'kd

Mkå ghjk uUnu çlkn

,lksfl,V çksQslj ,oa iwoZ v/;{k

fo'ofo|ky; fgUnh foHkkx

jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

'kks/kkFkhZ

vEcqt fd'kksj xkSre

¼tS-vkj-,Q½

fo'ofo|ky; fgUnh foHkkx

jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

ÁLrkouk

‘दलित’ शब्द का अर्थ पीड़ित, शोषित, ‘दबाया हुआ’ एवं ‘जिनका हक छीना गया हो’ होता है। दलित साहित्य का सर्वप्रथम आगाज मराठी में हुआ। दलित साहित्य के प्रारंभिक दौर में अधिकांश कविताएं लिखी गई, लेकिन सातवें दशक में अनेक दलित रचनाकारों ने कहानी विधा को अपनाया। दलित कहानी बदलते हुए सामाजिक परदृिश्य के यथार्थ चित्रण की एक विशिष्ट धारा के रूप में सामने आती है। स्वतंत्रता, समता और बंधुता की मूल भावना दलित कहानी की मूल चेतना है।

शरणकुमार लिंबाले का ‘छुआछूत’ कहानी संग्रह दलित साहित्य को नए और समकालीन परिप्रेक्ष्य में रखता है और उसे भारतीय आयाम में देखने की जरूरत पर जोर देता है। इस संग्रह में न सिर्फ शरणकुमार लिंबाले के अनुभवों की गूंज उभरती है बल्कि भारत जैसे देश में सदियों से सवर्णों के जुल्मों के शिकार हुए दलितों, महिलाओं और बच्चों के दुख–दर्द को बयां करते हुए वे नायक की तरह मिलते हैं। इस संग्रह की अनेक कहानियां ‘जाति न पूछो’ ‘समाधि’, ’हरिजन’, ‘रोटी’, ‘संबोधी’, ‘जवाब नहीं है मेरे पास’, ‘शांति’, ’छुआछूत’ आदि में दलितों के दमन की कथा है। निश्चित ही इस मराठी दलित कथाकार ने दलित साहित्य के खेत में ऐसे क्रांतिकारी बीज* बो दिए हैं, जिन्हें जितना काटोगे वे उतना ही फसल देंगे।

आज के दौर में दलित विमर्श को किसी पहचान की जरूरत नहीं है। दलित जीवन की पीड़ा, त्रासदी और उसके बेचैन संघर्ष से हिन्दी का बृहत्तर साहित्य

---

*बीज शब्दः पीड़ित, शोषित, खंडित, रौंदा हुआ, विनष्ट, कुचलना, दला हुआ, विघटित् टूटा हुआ।

जगत धीरे–धीरे परिचित होता जा रहा है। दलित पीड़ा के कुछ ऐसे ही मर्मस्पर्शीय जीवन चित्र उकेरते हुए शरणकुमार लिंबाले ने अपनी कहानियों के माध्यम से एक ऐसा दरवाजा खोला हैं, जो दलित जीवन के पीड़ा के साथ तो हमें रूबरू कराता ही है, और उसके संघर्ष के सफर को बखूबी बयां भी करता है।

कहानी विधा के माध्मय से मराठी कथाकार शरणकुमार लिंबाले भारतीय समाज में व्याप्त दलितों के शोषण, दोहन, उत्पीड़न का आकलन करते हैं। भोगे हुए यथार्थ की पीड़ा पर उनकी रचनायें खरी उतरती हैं, वे केवल धर्मिक व्यवस्था को ही नहीं बल्कि मानवीय संवेदना को भी ललकारती हैं। उनके अपने शब्दों में ''उस रूढ़ि–परंपरा को जिसने हमें अछूत ठहराया है'' ही अपने आप में एक सम्पूर्ण दलित व्यथा की व्याख्या है।

शरणकुमार लिंबाले जी का कहानी संग्रह 'छुआछूत', परिवेश के दायरे', 'जहर है मेरी जिंदगी की रोटी में', और 'औरत', 'आईना हो तुम' तीन खण्डों में विभक्त है। संग्रह की अनेक कहानियों में 'हरिजन', 'रोटी', 'संबोधि', 'जाति न पूछो', 'जवाब नहीं है मेरे पास', 'छुआछूत', 'शांति', 'सुजाता' आदि दलितों के पेट की आग, उनमें उभरती नैसर्गिक मानवीय महत्त्वकांक्षाओं के दमन की कथा है।

अस्पृश्यता और अमानवीयता को ही दलित जीवन के लिए स्वाभाविक व्यवहार समझने वाली भारतीय जीवन पद्धति के सामने दलित चेतना ने सवालों की लंबी फेहरिस्त पेश की। ये सवाल एक तरफ दलितों के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक बहिष्करण से जुड़े थे तो दूसरी तरफ उन लाखों तथाकथित अवैध संतानों की मनः स्थितियों से भी जुड़े थे, जिन्हें कदम–कदम पर सवर्णों से ही नहीं दलित समाज से भी प्रताड़ित होना पड़ता था। दलित साहित्य की आवाज

इस मायने में विलक्षण थी कि उनमें काल्पनिकता की हास्य–उड़ान की बजाय उन हृदयविदारक परिस्थितियों का मार्मिक साक्षात्कार था जो दलितों के जीवन की अनिवार्य स्थितियाँ थीं। दरअसल ये आत्मकथन सहानुभूति की मानवीय संवेदना की बजाय आपबीती की मर्मांतक अभिव्यक्ति थी। सुपरिचित दलित चिंतक 'विमल थोरात' का यह कहना बिल्कुल सही है कि "मानवता को शर्मसार करने वाली धर्म, रीति, रूढ़ि का संवर्धन करने वाले ब्राह्मणवाद की चीरफाड़ है दलित साहित्य।" दलित साहित्य ने भारत को एक ऐसे विमर्श के केंद्र में ला खड़ा किया है जिसकी सच्चाइयों से निरंतर मुँह मोड़ा गया। लेकिन दलित लेखक भला इन हृदयविदारक सच्चाइयों से कैसे मुँह मोड़ सकता था जो स्वयं उसके जीवन का अनिवार्य हिस्सा था। इसीलिए दलित आत्मकथनों ने निजी प्रसंगों और व्यवहार की कसौटी पर समाज को रख दिया है। उनके सवालों से निरंतर मुँह चुराते और पीछा छुड़ाते समाज के पास बचाव के बहुत कम रास्ते हैं, क्योंकि किसी इतिहास और संस्कृति का मुलम्मा तब उतरता है जब हाशिए के लोग उसमें अपनी जगह तलाशते हैं। दरअसल आत्मकथन वेदना और यथार्थ का वह अग्निपूँज है, जिसमें झूठ और षडयंत्र के मिथ्या भवन झुलस रहें हैं। आत्मकथनों की दुनिया में 'अक्करमाशी' ने एक युगांतकारी प्रभाव निभाया। इस प्रभाव का मूल्यांकन अनेक संदर्भों में संभव है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक पूरे विश्व में मनुष्य–मनुष्य में भेदभाव दिखाई देता है। काला–गोरा, अमीर–गरीब, ऊँच–नीच, शोषक–शोषित, दलित–स्वर्ण इस तरह से भेदभाव दिखाई देता है।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, संत कबीर, संत शिरोमणि रविदास, सावित्रीबीई फुले, ज्योतिबा फुले, पेरियार, संत गाडगे बाबा, जगजीवन राम, के.आर.नारायणन, कांशीराम..........आदि इन जैसे महान् समाज सुधारकों ने हमारे देश में रूढ़ी–परंपरा, अंधश्रद्धा, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाकर सभी

भारतवासियों को जगाने का कार्य किया। इतना ही नहीं उन्होंने अपना पूरा जीवन इन दलित, शोषित—पीड़ित लोगों के लिए ही व्यतीत किया। दलितों को डॉ0 बाबासाहेब अंबेडकर' ने कहा था "शिक्षित बनों, संगठीत रहो और संघर्ष करों" जब तक दलित समाज शिक्षित, संगठीत नहीं होगा और संघर्ष नहीं करेगा, तब तक समाज में उन्हें ऐसे ही हीनता भरी जिंदगी जीना पड़ेगा। अन्याय के खिलाफ जब तक आवाज नहीं उठाएंगे तब तक अन्याय होने से नहीं रूकेगा।

दलित समाज में इन समाजसुधारकों के कारण ही अन्याय और अत्याचार के खिलाफ अपनी आवाज उठने लगे और उन्हें अपने अधिकारों, कर्तव्यों की जानकारी होने लगी। अपने ऊपर हुए अत्याचार, शोषण को अब समझने लगे हैं। इस तरह से सभी दलित वर्ग शिक्षा के प्रति जागृत होने लगी है। उनका शोषण कौन और क्यों कर रहा है? इन सभी बातों का विचार होने लगा, दलितों को कई पीढ़ियों से कभी किसी जमींदार के घर तो कभी किसी साहुकार के घर में काम करना पड़ता था। इन सभी शोषण/अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए दलित वर्ग शिक्षा ग्रहण करके अपने अधिकारों के प्रति जागृत होने लगे। शिक्षा के संबंध में 'बाबा साहब' ने कहे थे कि "शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो जितना पीएगा वह उतना ही दहाड़ेगा" दलितों का कोई महत्त्व नहीं है, उन्हें आज भी उनके ही अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है। इसका वास्तविक रूप हमें समाज के सामने लाना है। और उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागृत करना है। इस समाज की त्रासदी को हमें अपना दुख समझकर उनकी समस्याओं को हमें सुलझाना है। उनका हनन होने से हमें रोकना है। आज हमारे भारत में सभी को समानता से या सभी को सम्मान से जीने का संवैधानिक अधिकार है।

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक इन सभी परिस्थितियों में दलितों को भी बराबरी का स्थान देना चाहिए। इस कार्य के लिए कई राजनेताओं, समाज सुधारकों ने प्रयास किये हैं। और संविधान में इन दलितों को अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो इसलिए विशेष अधिकार दिए गए हैं। लेकिन

आज भी हमारे समाज में ऊँच–नीच, गरीब–अमीर आदि की खाई बढ़ती जा रही है। इन दलितों को अन्याय, अत्याचार, अंधविश्वास, पीड़ा, रूढ़ी–परंपरा, कर्मकांड इत्यादि से मुक्त करना ही हमारा कर्तव्य है और इनका यथार्थ चित्रण समाज के सामने लाने का प्रयास करना है। इस तरह से दलितों के जीवन में आए हुए कठिनाईयों का किस प्रकार सामना करना पड़ा? इनका जीवन संघर्ष किस तरह का रहा है? इन सभी वास्तविक एवं यथार्थ रूप से मैं परिचति हूँ। दलितों का दुख, दर्द, यातना, पीड़ा, उपेक्षा, छुआछूत इन सभी को मैं जानता हूँ इसलिए मैं ऐसे उपेक्षित विषय पर "शरणकुमार लिंबाले के उपन्यासों में दलित जीवन का संघर्ष : एक अध्ययन" इस विषय पर में अनुसंधान करना चाहता हूँ।

0;fDrRo ds /kuh 'kj.kdqekj fyackys

मराठी के चर्चित दलित कथाकार शरणकुमार लिंबाले का जन्म 1 जून सन् 1956 को पूना के एक गांव में हुआ, जो महाराष्ट्र ओर कर्नाटक की सीमा पर स्थित है। इनके पिता का नाम हनमंत लिंबाले और माता मसमा। शरणकुमार लिंबाले का जन्म जिस गांव में हुआ, वहां जाति–व्यवस्था का कठोरता से पालन होता था। शरणकुमार लिंबाले का प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्थानीय विद्यालय में हुई। आगे की पढ़ाई शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से मराठी भाषा में एम.ए. करने के बाद उन्होंने यहीं से "मराठी दलित साहित्य और अमेरिकन ब्लैक साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर पीएच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। शरणकुमार लिंबाले यशवंतराव चव्हाण, महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नासिक के प्रकाशन विभाग में सहायक संपादक के पद पर कार्य करते हुए यहीं विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं निर्देशक पद से सेवानिवृत हुए। जीवन में आयी सभी चुनौतियों का इन्होंने डट कर सामना किया व पूरे देश में अपनी एक विशिष्ट पहचाना बनाई। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के लिए शोधपरक लेखन कार्य किया। इनकी आत्मकथा' 'अक्करमाशी' के लिए उन्हें राष्ट्रीय पहचान प्राप्त हुई। इस पुस्तक का अंगेजी समेत अन्य कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। महाराष्ट्र सरकार द्वारा

कई बार सम्मानित किये जा चुके हैं एवं मराठी उपन्यास 'सनातन' के लिए वर्ष 2020 में 'सरस्वती सम्मान' से विभूषित किया गया।

fo"k; p;u dk vkfpR;

साहित्य के किसी भी विषय शोध अध्ययन बनाने से पूर्व उस विषय की पूरी अवधारणा समझ व उसके प्रत्येक बिंदु से अवगत होना पड़ता है। जो आवश्यक भी है। आज इस दौर में जहाँ समाज परिवर्तन के तीव्र दौर से गुजर रहा है वहीं कई वर्ग ऐसे भी जो आज भी उपेक्षित या अपने अधिकारों से वंचित रह जाते हैं। मुझे अध्ययन के दौरान 'हिंदू, सनातन, दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र, दलित ब्राहमण' आदि पढ़ने का अवसर मिला। उपन्यास एवं कहानी के अध्ययन के दौरान इनका व्यक्तित्व एवं विविध नियामक तत्त्वों ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

शोध विषय के चयन के दौरान मुझे इनकी आत्मकथा 'अक्करमाशी' को भी पढ़ने अवसर मिला जिससे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। इस पुस्तक में गाँव, जाति, धर्म–इन सभी दृष्टियों से खंडित हैं। गुमशुदा व्यक्तित्व के लिए जीने वाला, मेरे अस्तित्व को 'जारज' कहकर सतत् अपमानित किया गया है। ब्राहमणों से लेकर शूद्रों तक सभी अपने खानदानी अभिमान और खानदानी अस्मिता लिये जीते हैं, परंतु यहाँ मेरी अस्मिता पर ही बलात्कार हुआ है। बलात्कृत स्त्री की तरह मेरा यह जीवन यहाँ की नीति ने मेरे साथ एक अपराधी की तरह ही व्यवहार किया। मेरे जन्म को ही यहाँ अनैतिक घोषित किया है। दुर्बलों पर आक्रमण उनका शोषण करते समय सबलों ने हमेशा उनकी अबलाओं पर अत्याचार किये हैं। इन संबलों को यहाँ की सत्ता, सम्पति, समाज, संस्कृति और धर्म ने समर्थन दिया है, परंतु उस स्त्री का क्या होगा? उसे तो वह 'बलात्कार' अपने पेट में बढ़ाना पड़ता है। उस बलात्कार को जन्म देना पड़ता है। उस 'बलात्कार' का पालन–पोषण

करना पड़ता है और यह बलात्कार एक जीवन जीने लगता है। उसी जीवन की बेदना इस आत्मकथा में है।

शरणकुमार लिंबाले के कथा साहित्य को गहन अध्ययन, चिंतन के पश्चात् अनुसंधान के लिए मैंने "शरणकुमार लिंबाले के उपन्यासों में दलित जीवन का संघर्ष : एक अध्ययन" इस विषय का चयन किया है।

'kks/k dk mn~ns';

(1) शरणकुमार के कथा साहित्य में दलित जीवन संघर्ष का यथार्थ और वास्तविकता को स्पष्ट करना।

(2) दलित जीवन संघर्ष या दलितों पर सवर्णो के द्वारा किए गए अन्याय, अत्याचार, शोषण को स्पष्ट करना।

(3) हमारे समाज में दलित लोगों के जीवन में आने वाली दिक्कतें और जातिवाद किस प्रकार से हो रहा है इसकी वास्तविकता को स्पष्ट करना।

'kks/k Áfof/k

अनुसंधान ज्ञान के विविध पक्षों में गहनता एवं सूक्ष्मता लाता है। मनुष्य एक ऐसा जिज्ञासु व बुदधिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए निरंतर खोज, शोध या अनुसंधान करता रहता है। मानव की यह प्रवृत्ति चूंकि जन्मजात होती है जिसके कारण अनुसंधान उसके जीवन के हर क्षेत्र में चलता रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है। क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को साथ लेकर चलता है।

अनुसंधान लग्न, निष्ठा एवं अथक परिश्रम से किये जाने के कारण अनुसंधान स्थाई ज्ञान की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियां हैं। किन्तु मेरे शोध में अनुसंधान की विवेचनात्मक, वर्णात्मक,आगमनात्मक और विवरणात्मक पद्धति का तथा आवश्यकतानुसार अन्य विधि/प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा। अंततः सम्पूर्ण शोध विषय का निष्कर्ष दिया जाएगा।

'kk/k l lk/ku

1) शरणकुमार लिंबाले के समस्त प्रकाशित कथा साहित्य
2) शरणकुमार लिंबाले के रचनाओं पर अन्य लेखकों के आलोचनात्मक लेख
3) इंटरनेट
4) साहित्यिक पत्र–पत्रिकाएं
5) शरणकुमार लिंबाले से साक्षात्कार

'kk/kdk;l dk lo{k.k

विविध विश्व विद्यालयों में शोधकर्ताओं ने शरणकुमार लिंबाले के साहित्य पर शोध किए हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

1. ''दलित चेतना की बेचैनी और शरणकुमार लिंबाले'' – नमिता जयसकल (बेथुन कॉलेज कोलकत्ता, 2015)।
2. ''शरणकुमार लिंबाले और ओमप्रकाश वाल्मीकि के आत्मकथा एवं कहानी साहित्य का तुलनात्मक अध्यायन'' – कल्पना निलिन शेवाले (मुंबई विश्वविद्यालय, 2020)

3. ''ओमप्रकाश वल्मीकि और शरणकुमार लिंबाले की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन'' – रावत सरीता (महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्‌यालय, 2015)

4. ''डॉ0 शरणकुमार लिंबाले ब याचे साहित्य चिकित्सा अभ्यास'' – श्री अलोष शत्रुधन चिम (मुंबई विद्‌यापीठ, 2020)

5. ''शरणकुमार लिंबाले व सूरजपाल चौहान के कथा साहित्य व आत्मकथाओं का तुलनात्मक अनुशीलन'' – विमल गुजार लोदवाल (गुजरात केंद्रीय विद्‌यालय, 2017)

6. "शरणकुमार लिंबाले के साहित्य में दलित विमर्श" – दिपा भण्डारी (पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, 2024)

'kk/k dk;l gr| v/;k; oxhldj.k

vkHkkj &

ÁLrkouk &

1- ÁFke v/;k; % 'kj.kdqekj fyackys dk O;fDrRo ,o a dfrRo

1.1 जीवन परिचय

1.2 युग परिवेश

1.3 लेखन की प्रेरणा एवं प्रभाव

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

1.5 रचना संसार

2- f}rh; v/;k; % nfyr lkfgR; % mnHko vkj fodkl

2.1 दलित : अर्थ और परिभाषा

2.2 दलित साहित्य का परिचय

2.3 दलित साहित्य का इतिहास

2.4 दलित साहित्य की वर्तमान स्थिति

3- rrh; v/;k; % 'kj.kdekj fyckys d miU;klk e nfyr lekt dk thou l?k"k

3.1 जाति व्यवस्था और दलित समाज

3.2 दलित समाज का आर्थिक संघर्ष

3.3 शिक्षा के क्षेत्र में दलित समाज की यथार्थ स्थिति

3.4 दलित समाज की रीति–रिवाज एवं परम्परा

4- prFk v/;k; % 'kj.kdekj fyckys d miU;klk dk leh{kkRed v/;;u

4.1 सनातन

4.2 हिन्दू

4.3 नरवानर

4.4 झूंड

4.5 उपल्या

4.6 गर्व से कहो

5- ipe v/;k; %& 'kj.kdekj fyckyk d miU;klk e oxl vkj tkfr fojk/k

5.1 वस्तु शिल्प

5.2 शब्द चयन

5.3 संवाद योजना

6- milgkj&

7- lUnHk xzUFk&

(क) आधार ग्रंथ

(ख) संदर्भ ग्रंथ

(ग) सहायक ग्रंथ

fVIi.kh %& प्रस्तुत शोध के अध्याय वर्गीकरण अंतिम नहीं है, अपितु अतिआवश्यक होने पर संशोधन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक | शोधार्थी

(डॉ0 हीरा नंदन प्रसाद) | (अम्बुज किशोर गौतम)